परमार्थ दीनता से बनता है

परमार्थ दीनता से बनता है, केवल बल और पुरुषार्थ से नहीं. जब तक ईश्वर की कृपा नहीं होगी, काम नहीं बनेगा. सच बात तो यह है कि निम्नलिखित तीन बातें सभी सत्संगी भाइयों को याद रखनी चाहिए, और इसी से ईश्वर कृपा प्राप्त होगी.

१) केवल पुरुषार्थ से परमार्थ नहीं बनेगा.

२) ' परमात्मा चाहेगा तो हम से करा लेगा ' - केवल यह कहने से काम नहीं चलेगा.

३) परमार्थ के लिए प्रयत्न करना होगा और ईश्वर के सामने दीन बनना पड़ेगा. दीन बनना यह है कि ईश्वर के हुक्मों पर यानि धर्म और सत पर चलना. दीनता आने पर ईश्वर प्रेम जागेगा, ईश्वर कृपा होगी, और ईश्वर कृपा होने पर परमार्थ बनेगा.

इंसान नहीं जानता कि वह चाहता क्या है और मांगता क्या है? इंसान अंतःकरण के घाट पर बैठा है. जैसी चाह उठती है वैसा ही वह करता है. जब परमात्मा के दर्शन की चाह होती है तो वह बेज़ार हो जाता है और ऐसा लगता है कि वह अब इस दुनियाँ की चीज़ें नहीं चाहता. पर उसे मालूम नहीं कि उसके अन्दर और बहुत सी चाहों के अम्बार लगे हैं. जब उनकी चाह उठेगी परमात्मा की चाह जाने कहाँ चली जाएगी.

अभ्यास यह है कि मन का घाट बदला जाय और चाहों (इच्छाओं) को एक-एक करके नष्ट कर दें. छोड़ना तो यह है कि अन्दर कोई चाह बाकी न रहे. यदि आपके अन्दर की चाहें बनी हुई हैं तो केवल जंगल में जाने से वैराग्य नहीं होता. इसलिए सन्त कहते हैं कि ऐसी ख्वाहिशों को जो दुनियाँ के विरुद्ध नहीं हैं, पूरा कर देने में कोई आपत्ति नहीं है. परन्तु भोग को शास्त्रों के मुताबिक़ भोगो.

प्रारम्भ में उन चीज़ों को छोड़ो जो छोटी-छोटी चीज़ें हैं और आसानी से छोड़ी जा सकती हैं. बड़ी चीज़ों को पहले लेने से निराशा होगी. आदतों का क़बूल कर लेना आसान है लेकिन उनको छोड़ना उतना ही मुश्किल है. शुरुआत छोटी-छोटी चीज़ों से करो. जब इनमें कामयाबी मिलेगी तो हिम्मत और शक्ति कुछ और बढ़ जाएगी, तब बड़ी-बड़ी चीज़ों से लड़ सकोगे. जब तक क़ुर्बानी न कर सको, तब तक बड़ी चीज़ों से मत लड़ो. रास्ता मन और बुद्धि के द्वारा ही चलना है. जब तक मन और बुद्धि शुद्ध और शांत नहीं होंगे तब तक आत्मा दोनों से न्यारी नहीं होगी और ईश्वर के चरणों में नहीं लगेगी.

यह प्रेम-मार्ग है, कर्म-मार्ग नहीं. प्रेम-मार्ग बड़ा ही ऊंचा है. इसमें मन और बुद्धि को शुद्ध करते हैं. मन में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार सब आ गए इन सभी को शुद्ध करने के पश्चात् ईश्वर के दर्शन हो पाते हैं.

जब दो तारों में गांठ लग जाती है तो वे अलग नहीं हो सकते. उन्हें अलग करने के लिए गांठ खोलनी पड़ती है. इसी तरह मन और आत्मा में गांठ पड़ गयी है. जब यह गाँठ छूट जाय तो परमात्मा के दर्शन हों. अज्ञानता ही यह गाँठ है. सांसारिक चीज़ों को अपना समझने लगे और सारी दुनियांवी चीज़ों में आनंद देखने लगे, यही अज्ञानता है. आनंद तो आत्मा में है न कि विषयों में या दुनियां में. जब ज्ञान द्वारा यह भ्रान्ति छूट जाती है तब मालुम पड़ता है कि आनंद तो आत्मा में ही है, इन वस्तुओं में नहीं .

जब आप सोते हैं तो स्वप्न देखते हैं और स्वप्न में सुखी और दुखी होते हैं. परन्तु आँख खुलने पर सब झूंठा जान पड़ता है. स्वप्न में कभी आप राजा बनते हैं और कभी क़त्ल किये जाते हैं. राजा बनने पर ख़ुशी होती है और क़त्ल किये जाने पर दुःख. यह सभी सुख-दुःख भ्रान्ति होने के कारण था. इसी प्रकार हम सांसारिक वस्तुओं के मोह में फंस जाते हैं और भ्रान्तिवश उनमें सुख खोजते हैं.

ख्याल से ही हम भ्रान्ति में फंसे हैं और ख्याल से ही छूटेंगे. यह सारी दुनियाँ ख्याल से ही बनी है और ख्याल से ही छूटेगी भी. इसलिए सतगुरु का ख़्याल बाँध कर इन सभी सांसारिक वासनाओं और भोगों को काटते जाओ. यही सबसे नज़दीक रास्ता ईश्वर को पाने का है.

राम सन्देश : जनवरी-फरवरी १९९८